अथवा

भवः शर्वोरुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि,
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहित नमस्योऽस्मि भवते॥

6. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिये–

क्लमं ययौ कन्दुक-लीलयाऽपिया।
तया मुनीनां चरितं व्यगाह्यत।
ध्रुवं वपुः काञ्चन-पद्म-निर्मितं
मृदु प्रकृत्या च संसारमेव च॥

अथवा

कियच्चिरं श्राम्यसि गौरि। विद्यते,
ममापि पूर्वाश्रमसञ्चितं तपः।
तदर्धभागेन लभस्व काङ्क्षितं,
वरं तमिच्छामि च साधु वेदितुम्॥

7. कादम्बरी में चित्रित विन्ध्याटवी के भयंकर विध्वंस का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

8. शिशुपालवध के अनुसार श्रीकृष्ण, उद्धव और बलराम की मन्त्रणा में विद्यमान राजनीतिक तत्त्वों की विवेचना कीजिए।

9. 'विक्रमाङ्कदेवचरितम्' के प्रथम सर्ग की कथा का सार अपने शब्दों में लिखिए।

MASA–05

December – Examination 2020

M.A. (Final) Examination

SANSKRIT

गद्य तथा काव्य

Paper : MASA-05

*Time : **2** Hours*] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **8×2=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार, एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1. (i) बाणभट्ट कृत कथा का नाम बताइये।
   (ii) वैशम्पायन के पूर्व जन्म का क्या नाम था ?
   (iii) माघ की रचना का नाम बताइये।
   (iv) शिशुपालवधं में कितने सर्ग हैं ?
   (v) 'विक्रमाङ्कदेवचरितम्' के रचयिता का क्या नाम है ?

(vi) 'विक्रमाङ्कदेवचरितम्' में किस राजा का वर्णन है ?

(vii) पुष्पदन्त द्वारा रचित स्तोत्र का क्या नाम है ?

(viii) 'कुमारसंभवम्' महाकाव्य में कुमार कौन है ?

खण्ड—ब **4×16=64**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

2. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसङ्ग व्याख्या हिन्दी में कीजिए—

तस्य च राज्ञः कलिकाल-भयपुञ्जीभूतकृतयुगानुकारिणी त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा, मज्जन्मालविलासिनीकुचतटा-स्फालन-जर्जरितोर्म्मिमालया जलाव-गाहनागत-जयकुञ्जर-कुम्भ-सिन्दूर-सन्ध्यायमान-सलिलया उन्मद-कलहंस-कुल-कोलाहल-मुखरित-कूलयावेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत्।

अथवा

बहलाज्य-धूम-पटल-मलिनीकृताश्रमस्य भगवतः प्रभावाद् गीतमिव रवि-किरणजाल-मपि दूरतः परिहरति तपोवनम्। एते च पवन-लोल-पुञ्जीकृत-शिखा-कलापा रचिताञ्जलय इवात्र मन्त्रपूतानि हर्विषि गृह्णन्ति एतत्प्रीत्याशुशुक्षणयः। तरलित-दुकूलवल्कोऽयञ्चाश्रमलता-कुसुम-सुरभि-परिमलो मन्दमन्दचारी सशङ्क इवास्य समीपमुपसर्पति गन्धवाहः।

3. निम्नलिखित श्लोक की सप्रङ्ग व्याख्या कीजिए—

मन्त्र योध इवाधीरः सर्वाङ्गैः संवृत्तैरपि।
चिरं न सहते स्थातुं परेभ्यो भेदशङ्कया॥

अथवा

बुद्धिशस्त्रः प्रकृत्यङ्गो घनसंवृतिकञ्चुकः।
चारेक्षणो दूतमुखः पुरुषः कोऽपि पार्थिवः॥

4. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिये—

जयन्ति ते पञ्चमनाद-मित्र-
चित्रोक्ति सन्दर्भविभूषणेषु।
सरस्वती यद्वदनेषु नित्य-
माभाति वीणामिव वादयन्ती॥

अथवा

जगाम याङ्गेषु रथाङ्गनाम्नां,
परस्परादर्शनलेपनत्वम्।
सा चन्द्रिका चन्दनपप्रकान्तिः,
शीतांशु शाणाफलके ममज्ज॥

5. निम्नलिखित श्लोक की संस्कृत में सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिये—

महोक्षः खटवाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥